ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-10* November- 2017
Innovation The Research Concept

# हिन्दी उपन्यासों में नारी शिक्षा व नारी–चेतना

**प्रेमलता सैनी**
व्याख्याता,
हिन्दी विभाग,
अग्रवाल पी.जी. महाविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

**सारांश**

हिन्दी महिला उपन्यासों पर दृष्टिपात करें तो हम पाते हैं कि इनके लेखन में अपनी ताजगी, स्फूर्ति और शिल्प की नवीनता में अत्यधिक सम्पन्न है। इनके उपन्यासों में अधिक आक्रामकता सामाजिक जीवन की विसंगतियों के कारण आक्रोश से भरी हुई तथा युवापीढ़ी की मानसिकता और इस मानसिकता को तोड़ने वाली सत्ता के विभिन्न चेहरों की पहचान में सजग और सतर्क है। इन उपन्यासकारों ने बहुआयामी विषय–वैविध्य से परिपूर्ण अपनी कृतियों में जहाँ सामाजिक दायित्व का निर्वाह सफलतापूर्वक किया है और सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा की है, वहीं रूढ़ियों का बहिष्कार भी किया है। व्यक्ति के आत्मसंकट, सामाजिक परिवर्तन की स्थितियाँ सत्ता और श्रम के संघर्ष तथा आम आदमी की जिन्दगी की पहचान में ये उपन्यास सर्वथा सफल है। साथ ही नारी जीवन के बहुआयामी रंगों को विविध दृष्टिकोणों से परख चिन्तन कर नारी अस्तित्व की मौलिक अवधारणा इस दशक के महिला उपन्यासकारों ने स्थापित की है। इस दशक का महिला लेखन अनुभव के यथार्थ से नियोजित है। अतः वह सच्चाई और वास्तविकता को इंकार कर जिन्दा नहीं रह सकता। इस सन्दर्भ में 'शाल्मली', 'अशेष', 'ठीकरे की मंगनी', 'शेष यात्रा', 'अनारी', 'संवित्तरी', उम्र एक गलियारे की, आदि रचनायें देखने योग्य हैं। आततायी परिस्थितियाँ व्यक्ति को नकारती भी हैं। ऐसी स्थिति में व्यक्ति अस्मिता–संकट से टकराता है। ऐसी टकराहटों की प्रतिध्वनि 'शाल्मली', 'शेषयात्रा', 'अशेष' एवं 'ठीकरे की मंगनी' जैसे उपन्यासों में सुनाई पड़ती है।

नारी जीवन के वर्तमान संघर्षों का चित्रण महिला उपन्यासकारों का प्रिय विषय है। कार्यशील महिलाओं की संघर्षपूर्ण जीवन स्थिति के युगानुरूप चित्रण में इन्हें पूर्ण सफलता मिली है। ये लेखिकायें पारिवारिक जीवन के चित्रण एवं नारी के कोमल भावों के मनोवैज्ञानिक अंकन में सफल रही हैं। नारी स्वतन्त्रता का रूप बदल गया है। इसकी झलक इन महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में स्पष्ट दिखायी देती है। महिलाओं में समानाधिकार की अभिलाषा अधिक बलवती हुई है। समय परिवर्तन के साथ ही पारिवारिक जीवन मूल्य भी परिवर्तित परिलक्षित होते हैं। नवीन परिस्थितियों, नवीन आवश्यकताएँ एवं नव–सामाजिक संबंधों का प्रभाव साहित्य पर पड़ रहा है। प्राचीन मूल्य एवं परम्पराएँ टूट गई हैं। परिवार में कुंठा, तलाक, तनाव व बिखराव बढ़ते जा रहे हैं। इन महिला उपन्यास लेखिकाओं ने भी इन बिखरती टूटती स्थितियों के चित्र खींचे हैं।

**मुख्य शब्द** : नारी शिक्षा, नारी चेतना के विभिन्न स्वरूप, सामाजिक चेतना, राजनीतिक चेतना, धार्मिक चेतना, आर्थिक चेतना, विचारों की अभिव्यक्ति आदि।

**प्रस्तावना**

'नारी' का एक अर्थ 'न. अरि' अर्थात् जो किसी की शत्रु नहीं। प्राणी मात्र की हित भावना से आपूरित नारी का हृदय सदा दया, माया, ममता, मधुरिमा और अगाध विश्वास लौटाने को तत्पर रहता है। नारी की उपयुक्त व्याख्या महादेवी जी के इस वक्तव्य से भी पुष्ट हो जाती है–"नारी केवल माँस पिण्ड की संज्ञा नहीं है। आदिकाल से आज तक विकास पथ पर पुरुष का साथ देकर उसकी यात्रा को सरल बनाकर, उसके अभिशापों को स्वयं झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शक्ति भरकर मानवी ने जिस व्यक्तित्व चेतना और हृदय का विकास किया है उसी का नाम नारी है।" नारी शब्द स्वतः सम्पूर्ण सर्वथा निरपेक्ष अर्थ का बोधक नहीं वरन् उसमें शक्ति सौन्दर्य और शालीनता आदि वे सब तत्व समाहित हैं जो पुरुष से सम्बन्धित है किन्तु मानव समाज में 'नारी' शब्द को इस सामान्य अर्थ में ग्रहण न करके उसका विशेष अर्थ निश्चित किया गया है। जिसमें उसका स्थान नाम से अधिक महत्त्वपूर्ण है।[1]

**अध्ययन का उद्देश्य**

हिन्दी महिला उपन्यास लेखिकाओं में नासिरा शर्मा, कान्ति त्रिवेदी, उषा प्रियंवदा, शशिप्रभा शास्त्री आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन लेखिकाओं ने पुरुष द्वारा नारी पर अत्याचार दहेज प्रथा, सामाजिक कुरूतियों आदि को अपने उपन्यासों में स्थान दिया है। साथ ही इन लेखिकाओं ने उन नूतन समस्याओं एवं संघर्ष का चित्रण किया है जो वर्तमान युग में व्याप्त कुण्ठा, तनाव, असंतोष एवं विशृंखला का परिणाम है। सामूहिक रूप से अनुशीलन करने पर इन लेखिकाओं के उपन्यास में निम्नांकित प्रवृत्तियाँ परिलक्षित होती है–शोषण की निन्दा, पीड़ित वर्गों के प्रति संवेदना, वर्तमान सभ्यता में निहित छिद्रों का व्यंग्यपूर्ण अन्वेषण समाज सुधार की आकांक्षा की अकुलाहट, प्राकृतिक एवं मानसिक वातावरण साम्प्रदायिक वैमनस्य, बेकारी, महंगाई, राजनैतिक पतन से संबंद्ध समस्याओं का स्वतन्त्र अथवा प्रासंगिक उल्लेख हैं।

नारी चेतना संयुक्त सामासिक शब्द है। इसमें 'नारी' और 'चेतना' इन दो शब्दों का योग होता है। इसका सामासिक विग्रह होगा नारी की चेतना अथवा नारी से सम्बद्ध या नारी विषयक चेतना। समस्त पद के रूप में नारी चेतना में नारी और चेतना दोनों का सम्मिलित अर्थ समाविष्ट होता है। अतः नारी–चेतना का अर्थ हुआ इकाई के रूप में, अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखने वाली वह अन्तःप्रेरित मानसिक सचेतन शक्ति, स्थिति, दशा अथवा क्षमता, जिसका सम्बन्ध नारी के अपने विचारों, प्रभावों, संकल्पों, अनुभूतियों, संवेदनाओं, बिम्बों आदि से होता है। इस प्रभारी नारी–चेतना, चेतन मानसिक प्रक्रिया है, शारीरिक नहीं। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि नारी–चेतना, नारीगत, नारी में निहित, नारी से सम्बद्ध नारी में अन्तर्भूत उसके मन या मस्तिष्क के भीतर निरन्तर होने वाली प्रक्रिया है। वह अबाधित, अनरवत् और विकासशील प्रवृति है। एक प्रकार से समूची संवेदनात्मक और वैचारिक, मानसिकता, सम्बन्ध और मूल बोध की वाचक मनोदशा को चेतना कहा जा सकता है। इसी मानसिकता की अभिव्यंजना जब नारी के व्यक्तित्व और चिंतन के माध्यम से होती है, तो सामान्य चेतना 'नारी चेतना' अभिधान ग्रहण कर लेती है। शिक्षा के प्रचार–प्रसार ने ही नारी के लड़खड़ाते कदमों को टिकाव दिया। शिक्षित नारी को अपने अधिकारों की ओर जागरूक होकर अपने अस्तित्व की पहचान बनाने में करवट लेती सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिस्थितियों का हाथ रहा। उसने समाज में फैले नारी अत्याचारों के विरोध में आवाज उठानी प्रारम्भ की। समाज में व्याप्त दुःख, दयनीयता, घुटन, बेबसी, अत्याचार, अनाचार आदि परिस्थितियों के संघर्ष व उससे टूटते परिवार, स्त्रियों के अपने अहं पर चोट लगने से टूटते घर, पति–पत्नी सम्बन्धों की सोच में परिवर्तन, पति–पत्नी सम्बन्धों में बदलाव, मुक्त–भोग इन सभी परिस्थितियों ने नारी की मानसिक सोच को झकझोर डाला।[2]

इस युग में जब आधुनिकता के आग्रह में जीवन मूल्य बदल रहे हैं, तब समाज के आन्तरिक स्वरूप में जो परिवर्तन हुए, वह भी एक नये अर्थ बोध से परिचालित है। नारी चेतना के विविध पक्षों तथा तत्सम्बन्धी परिवर्तनों और कारणों को देखकर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है, कि भारतीय नारी के चेतन मानस का उद्‌बोधन इतिहास की विशद् घटनावली का ही परिणाम है।'शाल्मली' उपन्यास में शिक्षा के व्यापक अर्थ को परिभाषित किया गया है। शाल्मली के अनुसार "शिक्षा का अर्थ है व्यवहार में व्यापकता और सोच की जटिलता को तोड़कर उसमें विस्तार लाना।[3] शिक्षित नारी में आत्मबोध की चेतना इस युग की सबसे बड़ी देन है। शिक्षा जानकारी या डिग्री के लिए न होकर जीवन निर्माण के लिए जरूरी है। इससे व्यक्ति के भीतर के सर्वोत्तम का विकास होता है। 'अशेष' उपन्यास में मंजरी भी इस तथ्य को स्वीकारती है। उसके अनुसार "शिक्षा मनुष्य में स्वाभिमान जगा देती है और उसी को लेकर विपरीत स्थितियों का सामना करती है।"[4] अर्थात् शिक्षा का उद्देश्य है व्यक्ति में ऐसी योग्यताओं को उत्पन्न करना, जिनके द्वारा वह विभिन्न मूल्यों की सुरक्षा, सृष्टि तथा उपभोग कर सके।[5] क्योंकि नारी के शिक्षित होने के बाद ही उसने अपने अधिकारों के प्रति सजगता का अनुभव किया। अब वह विवाह तक ही सीमित नहीं है, वरन् अपने कैरियर के बारे में भी पूर्ण रूप से सोचती है। 'शाल्मली' उपन्यास में शाल्मली के अनुसार "इस कम्पटीशन में आ गई तो उसका जीवन बदल जायेगा, वह घर–बाहर बहुत कुछ कर सकती है। अपनी मर्जी से अपने घर और परिवार को संभाल सकती है वरना हर बात पर पति के आगे हाथ फैलाना पड़ेगा।"[6] यह सोचना मात्र शाल्मली का ही नहीं वरन् नारी की मानसिकता का है पात्र चाहे कोई भी हो। 'अशेष' उपन्यास में मंजरी भी कहती है–उसे जल्दी नौकरी कर लेनी चाहिए–किसी छोटी जगह के स्कूल में, फिर आगे पढ़ते रहना चाहिए। प्रयोग उसकी सहायता कर सकते हैं, आत्मनिर्भर होना उसके लिए आवश्यक है।[7]

शिक्षा के प्रसार ने नारी को एक नयी दृष्टि व आत्मनिर्भरता प्रदान की है। महरूख कहती है "एक घर औरत का अपना भी हो सकता है, जो उसके बाप व शौहर के घर से अलग उसकी मेहनत और पहचान का हो।[8] वह सदैव पुरुष पर आश्रित नहीं रहना चाहती, उसके अनुसार उसका भी अपना व्यक्तित्व है।"[9] यह स्थिति एक वर्ग विशेष तक ही सीमित नहीं है, वरन् चाहे वह उच्च मध्यम वर्ग हो या निम्न मध्यम वर्ग, शिक्षा के प्रति रूझान व उससे बढ़ता आत्मबोध निम्नवर्ग के अनेक पात्रों द्वारा देखने को मिलता है। 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में गाँव में राधों ने पढ़ना–लिखना प्रारम्भ कर दिया वह धोबन है।[10] मंजुल भगत के उपन्यास 'अनारी' में शिक्षा के प्रति जागरूकता दिखाई पड़ती है। अनारी एक चौका बर्तन करने वाली स्त्री है, किन्तु उसकी जीवन्तता–बच्चों को मनसपलेटी के स्कूल में दाखिला दिला देती है, ताकि वे भी आत्मनिर्भर बन सकें। जीवन को जीने की ललक इस वर्ग में कूट–कूट कर भरी है। नारियाँ विद्रोही किन्तु जिम्मेदारियों से मुंह नहीं मोड़ती। वे आर्थिक रूप से स्वतन्त्र हैं।[11]

'सवित्तरी' उपन्यास में मीता भी अपने शिक्षित होने का फायदा उठाना चाहती है। उसमें भी आत्मनिर्भर होने की ललक है, वह कहती है "गृहस्थी में पति का हाथ बंटाना उसे नयी स्फूर्ति देता है, वह कहती है "मैं सोचती

थी कहीं किसी स्कूल में पढ़ाने लिखाने लगूंगी तो हाथ बंटेगा।"[12] 'उम्र एक गलियारे' की नायिका सुनन्दा सोचती है कितने लम्बे अरसे से वह किसी अन्य पर निर्भर घूम रही है, किन्तु उसे अब नया आत्मबोध हुआ है कि क्यों न वह स्वयं के लिए एक नयी राह खोजे और आत्मनिर्भर बने।[13] अनुचित तरीके से डाला गया दबाव भी नारी सहन नहीं कर पाती। पहले पति की रजामन्दी से ही घर के बाहर कदम रख सकती थी, किन्तु आज इस स्थिति में परिवर्तन देखने को मिलता है। 'अंधेरा–उजाला' उपन्यास में सारिका की आत्मनिर्भरता मुखर हो उठती है। वह अपने पति से कहती है–"आपको मेरी सीमाएँ निर्धारित करने का कोई अधिकार नहीं है। हाँ पारस्परिक समझौते द्वारा कुछ तय किया जा सकता है। आपको एक बात बता दूँ, मैंने अपाइन्टमेन्ट को मंजूर कर लिया है। कल से मैं कॉलेज ज्वाइन कर रही हूँ।"[14] नारी ने अपने जीवन को विवाह, पति या पुरुष तक ही सीमित नहीं रखा है, शाल्मली स्वयं कहती है–"मैंने भी फैसला कर लिया है कि शेष जीवन निपट अकेले रह कर गुजारूंगी। पुरुष तक मेरा जीवन लक्ष्य नहीं था।[15] महरूख सम्पूर्ण जीवन को शिक्षा के सहारे ही गुजार देती है। एक मुस्लिम खानदान की लड़की होने के बाद भी सभी रस्मों को तोड़ डालती है। स्वतन्त्र रूप से अध्ययन कर अपना जीवन स्वतन्त्रता से व्यतीत करती है। आत्मनिर्भरता व आत्मबोध की स्थिति उसमें पूर्णरूप से नयी पीढ़ी की नारी मानसिक स्थिति का स्पष्ट संकेत है। 'शेष यात्रा' उपन्यास में अनु को पति के द्वारा छोड़ जाना, किन्तु पुनः एक बार अनु का शिक्षा के प्रति झुकाव उसके सम्पूर्ण जीवन को व्यवस्थित चलाने में सहायक होता है। वह आत्मनिर्भरता के कारण संकोच का अनुभव नहीं करती।[16]

सदियों से व्यक्ति समाज द्वारा बनाई गई परम्परा व रीति रिवाजों का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पालन करता आ रहा है। किन्तु आधुनिक परिवेश में शिक्षित स्त्री–पुरूषों में नवीन मूल्यों का आगमन हो जाने से समाज का रूप परिवर्तित हो गया है। यह शिक्षा का ही प्रभाव है। जिसके कारण स्त्रियों में चेतना आयी और वे नौकरी के लिए घर से बाहर जाने लगी। आज की नारी चैतन्य नारी है वह अपने भविष्य के प्रति सजग है। वह अच्छी तरह जानती है कि किसके साथ उसका जीवन निर्वाह हो सकता है इसलिए अपने भविष्य के हर क्षेत्र में अपना निर्णय स्वयं लेना अपना अधिकार समझती है, नारी सिर्फ स्वनिर्णय लेना ही अपना अधिकार नहीं समझती बल्कि अपने अधिकारों को सुरक्षित भी रखती है, जब उसे लगता है कि उसके अधिकार कोई अन्य व्यक्ति छीन रहा है। तो वह संजीदा हो जाती है।

**निष्कर्ष**

वस्तुतः कहा जा सकता है कि शिक्षित होने के बाद नारी का बौद्धिक धरातल पहले से अधिक सुदृढ़ हुआ है। नवीन मूल्यों की स्थापना व अधिकारों के प्रति चेतना का भाव शिक्षा के माध्यम से चेतता दिखाई देता है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *निरूक्त 3/21/2–स्त्रियः स्त्यायते अपत्रपणकर्मण*
2. *कल्याण–नारी विशेषांक पृष्ठ 127*
3. *नासिरा शर्मा–शाल्मली, पृ. 135*
4. *कान्ति त्रिवेदी–अशेष, पृ. 117*
5. *डॉ. देवराज–संस्कृति का दार्शनिक विवेचन, पृ. 368*
6. *नासिरा शर्मा–शाल्मली, पृ. 23*
7. *कान्ति त्रिवेदी–अशेष, पृ. 92*
8. *नासिरा शर्मा–ठीकरे की मंगनी, पृ. 197*
9. *ऊषा प्रियंवदा–शेषयात्रा, पृ. 63*
10. *नासिरा शर्मा–ठीकरे की मंगनी, पृ. 66*
11. *मंजुल भगत–अनारी, पृ. 39*
12. *शैलेश भटियानी–सवित्तरी, पृ. 78*
13. *शशि प्रभा शास्त्री–उम्र एक गलियारे की, पृ. 114*
14. *विष्णु पंकज–अंधेरा उजाला, पृ. 07*
15. *नासिरा शर्मा–शाल्मली, पृ. 146*
16. *नासिरा शर्मा–ठीकरे की मंगनी, पृ. 87*